13.10.20
2

लग्नसूर्ययोरेकराशिस्थिते लग्नसाधनप्रकारः —

यदि तनुदिननाथावेकराशौ तदंशा-
न्तरहत उदयः स्यात्खाग्निहृत्विष्टकालः।
इनत उदय ऊनश्चेत्सशोध्यो द्युरात्रान्-
निशि तु सरसभार्कात्स्यात्तनूरिष्टकाले ॥

अन्वयः — यदि तनुदिननाथौ एकराशौ तदंशान्तरहतः उदयः खाग्निहृत् इष्टकालः स्यात्, चेत् उदयः इनतः ऊनः सः द्युरात्रात् शोध्यः (भवेत्), निशि तु सरसभार्कात् इष्टकाले तनुः स्यात्।

तारा: यदि चेत्, तनुदिननाथौ- लग्नसूर्यौ, एकराशौ समानराशौ, स्यातां तदा, तदंशान्तरहतः लग्नसूर्ययोरन्तरांशेन गुणितः, उदयः सूर्यलग्नाश्रितराश्युदयः खाग्निहृत् त्रिंशद्भक्तः इष्टकालः स्यात्। चेद् यदि, इनतः सूर्यात् उदयः लग्नम्, ऊनः हीनः, तदा द्युरात्रात् अहोरात्रतः (षष्टिघटिकातः) शोध्यः भवेत्।

अथ रात्रिगतेष्टकालसाधनमभीष्टं चेत् तर्हि निशी-त्यादिकं कथयति- निशि रात्रौ, तु सरसभार्कात् सषड्भसूर्यात्, इष्टकाले रात्रिगतेष्टकाले, तनूः लग्नः साध्यः स्यात्, अर्थात् षष्टिघटिकातः शोधनेन सूर्योदयादिष्टं सिद्ध्यतीत्याशयः।

भावार्थः — सायनलग्न और सायनसूर्य ये दोनों जब एक राशि में हों, तो दोनो के अंशो के अंतर को सूर्य के उदय से गुणा करें। गुणनफल में 30 का भाग दें। तब फलात्मक लब्धि स्वेष्टकाल होता है। यदि सूर्य की तुलना में सायन लग्न कम हो, तो उसको 60 घटी में से घटायें। जो शेष रहे, वह स्वेष्टकाल होता है। स्पष्टसूर्य में 6 राशि जोड़कर उससे लग्न साधन करें। उपर जो इष्टकाल बताया गया है, उसमें से दिनमान को घटा दें। जो शेष रहे वही इष्टकाल होता है।

डॉ० सुधिर कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णिया।

ग्रहलाघवम्

शास्त्री - III

13.10.20
1

भोग्यकालान्न्यूनेष्टकाले लग्नसाधनप्रकार: —

भोग्यतोऽल्पेष्टकालात्खरामाहतात्
स्वोदयाप्तांशयुग्भास्कर: स्यात्तनु: ।
अर्कभोग्यस्तनोर्भुक्तकालान्वितो
युक्मध्योदयोऽभीष्टकालो भवेत् ॥

अन्वय:- भोग्यत: अल्पेष्टकालात् खरामाहतात् स्वोदयाप्तांशयुक् भास्कर: तनु: स्यात्, अर्कभोग्य: तनो: भुक्तकालान्वित: (तत:) युक्तमध्योदय: अभीष्टकाल: भवेत् ।

तारा — भोग्यत: भोग्यकालत:, अल्पेष्टकालात् न्यूनेष्टकालात्, खरामाहतात् त्रिंशद्गुणितात्, स्वोदयाप्तांशयुक् निजोदयभक्तलब्धांशादिना युक्त:, भास्कर: सूर्य: तनु: लग्नं, स्यात् । अर्कभोग्य: सूर्यस्य भोग्यांशवशात् भोग्यकाल:, तनो: लग्नस्य, भुक्तकालेनान्वित: भुक्तकालसहित: तत:, युक्तमध्योदय:, सूर्यलग्नमध्यवर्तिराश्युदययुक्त:, अभीष्टकाल: स्वेष्टकाल:, भवेत् ।

भावार्थ:- लग्नसाधन प्रकार — राशि का भोग्यकाल यदि इष्टकाल से अधिक हो, तो पलात्मक इष्टकाल को 30 से गुणा करके उसमें सायनरवि (जिस राशि का हो, उस राशि का उदय) का भाग देकर जो अंशादि लब्धि प्राप्त हो, उसको इष्टसूर्य में जोड़ देने पर इष्टकालिक लग्न सिद्ध होता है ।

इष्टकालसाधन प्रकार — इष्टकालिक लग्न में अयनांश को जोड़कर जो योगफल प्राप्त हो, उससे भुक्तकाल का साधन करें और स्पष्टसायन सूर्य से भोग्यकाल निकालें उसके बाद सायनलग्न और सायनसूर्य इन दोनों के मध्य में जिस राशि का उदय हो, उसके अंक ग्रहण करके उसमें भुक्तकाल और भोग्यकाल के अंको को जोड़ दें, तो पलात्मक अभीष्टकाल होता है ।